

शीशम, बेर आदि वृक्षों की शाखाओं पर लगने वाला एक लाल पदार्थ, लाख।

लाक्षागृह पुं. (तत्.) लाख से तैयार किया गया घर, इसका उल्लेख महाभारत में मिलता है जिसे दुर्योधन ने पांडवों को जलाकर मारने के लिए बनवाया था।

लाक्षा-रस पुं. (तत्.) 1. महावर जो पहले लाख को पानी में उबालकर बनाया जाता था 2. पैरों में लगाने का महावर, अलक्तक।

लाक्षा-वृक्ष पुं. (तत्.) 1. ढाक, पलाश 2. कौशाम्ब, कोसम।

लाक्षिक वि. (तत्.) 1. लाख का, लाख संबंधी 2. लाख से रंगा हुआ।

लाख वि. (तद्.) 1. सौ हजार 2. बहुत अधिक, अनेकानेक पुं. सौ हजार की संख्या स्त्री. पीपल आदि वृक्षों पर लगने वाले एक तरह के कीड़ों से बना हुआ पदार्थ- विशेष, लाल रंग के छोटे-छोटे कीड़े जिनसे लाह निकलती है।

लाखना स.क्रि. (देश.) 1. लाख से फूटे बरतन का छेद बंद करना 2. जान लेना, समझ लेना।

लाखपती पुं. (तद्.) वह जिसके पास लाखों रूपयों की संपत्ति हो, बड़ा अमीर या धनवान।

लाखा पुं. (तद्.) 1. लाख से बना हुआ एक रंग जिससे स्त्रियाँ होंठ रंगती हैं 2. गेहूँ के पौधों का एक रोग जिससे पौधों की नाल लाल होकर सड़ जाती है।

लाखागृह पुं. (तद्.+तत्.) लाख से बनाया गया घर, जिसे दुर्योधन ने पाण्डवों को जला कर मार डालने के लिए वारणावर्त में बनवाया था।

ला-खिराज वि. (फा.) जिसका खिराज अर्थात् लगान न देना पड़े, कर या लगान से मुक्त।

ला-खिराजी स्त्री. (तत्.) 1. वह भूमि जिस पर खिराज या लगान न देना पड़े 2. कर या लगान से होने वाली छूट।

लाखी वि. (तद्.) लाख के जैसा पुं. मटमैला लाल रंग 3. मटमैले लाल रंग का घोड़ा।

लाखों वि. (तद्.) 1. कई लाख 2. बहुत अधिक, अनेकानेक 3. असंख्य।

लाग स्त्री. (तत्.) 1. संबंध, लगाव 2. लगन, धुन उदा.- 'जो प्रथमहिं देखे सुनै, बड़े प्रेम की लाग', रसराज, मतिराम 3. प्रेम 4. द्वेष, वैर, शत्रुता 5. प्रतिस्पर्धा, होड़ 6. भूमि-कर, लगान 7. एक प्रकार का नृत्य या धुन अ.क्रि. लगता है, प्रतीत होता है उदा. निज कवित्त केहि लाग न नीका-मानस 8. टीका लगाने का चेप 9. भस्म।

लाग-डॉट स्त्री. (तद्.) 1. वैर-विरोध, मनमुटाव, अनबन 2. वैर-विरोध के साथ स्पर्धा।

लागत स्त्री. (तत्.) 1. किसी वस्तु के तैयार करने में लगने वाला खर्च 2. बेचने के लिए बनाई गई वस्तु पर पूँजी तथा अन्य व्यय मिलाकर कुल खर्च धनराशि।

लागना अ.क्रि. (देश.) 1. लगना 2. संलग्न होना, संपृक्त होना 3. प्रतीत होना 4. साथ रहना 5. टोह में रहने वाला, शिकारी।

लागर वि. (फा.) दुबला-पतला और कमजोर, अशक्त, कृश।

लाग-लपेट स्त्री. (देश.) ऐसी बात जिसमें धोखा या पक्षपात की कोई बात छिपी हुई हो।

लागि अ.क्रि. (देश.) 'लागना' क्रिया का भूतकालिक रूप क्रि.वि. 1. लगकर उदा.- कान लागि कहयो जननि जसोदा-सूरसागर 2. लगाकर उदा.- तव चरननि की आस लागि उबरी -सूरसागर 3. निकट, पास अव्य. 1 तक 2 द्वारा, से 3 के कारण 4 के लिए।

लागुडिक वि. (तत्.) जो हाथ में डंडा लिए हो पुं. पहरेदार, प्रहरी।

लागू वि. (देश.) 1. लगने वाला, जो लग सके या लगाया जा सके जैसे- यह नियम विश्वविद्यालयों पर लागू नहीं होता 2. किसी के साथ लगा रहने वाला, लगू 3. चरितार्थ (होने वाला) जैसे- यह लोकोक्ति तुम पर पूर्ण रूप से लागू होती है 4.